



# कृषक समाचार

भारत कृषक समाज का मासिक मुख पत्र

वर्ष 56

जनवरी, 2011

अंक 1

## सभापति का पत्र

हमारे संस्थापक डॉ पंजाबराव देशमुख जी का जन्म दिवस 27 दिसम्बर 2010 को भारत कृषक समाज के नई दिल्ली कार्यालय में मनाया गया। डॉ देशमुख का जन्मदिन विभिन्न राज्यों में भी मनाया गया। उनके द्वारा किसानों के कल्याण के लिए दिए गये योगदान को हमेशा याद रखना चाहिये तथा हम उनके लक्ष्यों और विचारों को पूरा करने का प्रयास करते हैं।



कृषक समाचार के हर महीने के संपादकीय में हम अपनी मासिक गतिविधियों के बारे में आपको अवगत करवाते हैं जहां हम सभी हितधारकों जोकि किसान नीति निर्माता तथा वह जो नीतियों को प्रभावित करते हैं की जागरूकता बढ़ाने का कार्य करते हैं।

जिस जैविक खेती को आज हम जानते हैं वह सर अल्बर्ट हॉवर्ड द्वारा शुरू की गई थी। उन्होंने सन् 1931 तक 26 साल भारत में सीखा तथा काम किया। 'जैविक खेती के पितामह' को श्रद्धांजलि इस अंक का हिस्सा है।

मैंने कैनकन मेक्सिको में आयोजित 'कृषि एवं ग्रामीण दिवस' में भाग लिया जिसका आयोजन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के मौके पर किया गया। यूएनएफसीसीसी 16 में श्री जयराम रमेश पर्यावरण मंत्री भारत सरकार ने भाग लिया। जलवायु परिवर्तन से कृषि बहुत अधिक प्रभावित हो रही है। भारत में हमारे लिए एक प्रमुख चिंता का विषय यह है कि दक्षिण पूर्व एशिया में अगले 20 वर्षों में निरंतर 5 साल तक सूखा पडने की संभावना है। यह भारत के किसानों को सबसे अधिक प्रभावित करेगा।

मैंने नई दिल्ली में 'ग्रामीण भारत के लिए पीने का पानी' पर आयोजित संगोष्ठी में भी भाग लिया जहां मैंने सुझाव दिया कि भारत में पीने के पानी की किसी भी नीति को बनाने से पहले महिलाओं से परामर्श लेना चाहिये तथा महिलाओं द्वारा ही परियोजनाओं का प्रबंधन किया जाना चाहिये क्योंकि महिलाओं को ही हर दिन घरों में पानी की व्यवस्था करनी पडती है। दुनिया तथा भारत में कुल कृषि श्रमिकों में से 70 प्रतिशत महिलाएँ हैं तथा कोई भी उनसे सलाह नहीं लेता।

भारत कृषक समाज ने इफको फाउंडेशन के साथ मिलकर 'बजट 2011-12 पर पूर्व चर्चा' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। अगर किसी भी सदस्य के पास अगले बजट

के लिए सुझाव हैं तो कृपया वह हमें तुरंत लिखकर भेज दें ताकि हम उन्हें अपनी सिफारिशों के साथ शामिल कर भारत सरकार को दे सकें।  
 मैं सभी को एक खुशहाल तथा समृद्ध नव वर्ष की शुभकामनाएं देत हूँ।

अजय जाखड़

अध्यक्ष, भारत कृषक समाज

0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0

फर्टीगेशन एक प्रक्रिया है जिसमें उर्वरक या अन्य पानी धुलनशील उत्पादों का उपयोग एक सिंचाई प्रणाली जैसे ड्रिप सिंचाई के जरिये किया जाता है। पानी और पोषक तत्वों के सही प्रयोग से उपज में वृद्धि तथा उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार होगा। फर्टीगेशन पानी भी बचाता है तथा उर्वरक के उपयोग को कम करता है। उदाहरण के लिए खुले मैदान खेती में सब्जियों में फर्टीगेशन की प्रक्रिया का इस प्रकार इस्तेमाल किया जा सकता है -

Table 2. Fertigation scheduling in vegetables under open field cultivation

Crop	Spacing		Plants	Fertigation schedule		Dose				Total			Yield
	Row to row	Plant to plant		N	P	K	N	P	K	Kg/ha	Kg/ha	Kg/ha	
Tomato*	0.3	1.2	27778	Vegetative stage- Oct	25	15	30	111	67	133	500		
				Flowering - Nov	50	30	60						
				Flowering and harvesting - Dec - March	50	30	60						
Brinjal	0.5	1.2	16667	Vegetative stage- Oct	25	15	30	109	65	111	300		
				Flowering - Nov	50	30	50						
				Flowering and harvesting - Dec - March	50	30	50						
Onion	0.1	0.2	500000	Vegetative stage- Nov - Dec	50	30	50	124	75	143	250		
				Bulbous stage - Jan - March	75	45	90						
				Harvesting - April	0	0	0						
Garlic	0.1	0.2	500000	Vegetative stage- Oct - Nov	25	15	30	88	53	111	150		
				Bulbous stage - Dec - Feb	50	30	60						
				Harvesting - March	50	30	70						
Chilli	0.3	0.4	55556	Vegetative stage- July - Aug	25	15	30	126	76	132	100		
				Flowering - Sept	50	30	50						
				Flowering and harvesting - Oct- Dec	50	30	50						
Cabbage	0.3	0.3	83333	Vegetative stage- Oct	50	30	50	76	46	83	500		
				Curd stage - Nov	75	45	80						
				Harvesting - Dec - Jan	50	30	60						
Cauliflower	0.3	0.3	83333	Vegetative stage- Oct	50	30	50	76	46	83	250		
				Curd stage - Nov	75	45	80						
				Harvesting - Dec - Jan	50	30	60						
Broccoli	0.3	0.3	83333	Vegetative stage- Oct	50	30	50	76	46	83	150		
				Curd stage - Nov	75	45	80						
				Harvesting - Dec - Jan	50	30	60						
Knolkhol	0.15	0.2	22222	Vegetative stage- Oct	50	30	50	76	46	83	250		
				Heading stage - Nov	75	45	80						
				Harvesting - Dec - Jan	50	30	60						

Crop	Spacing		Plants	Fertigation schedule		Dose			Total			Yield
	Plant to plant	Row to row				N	P	K	N	P	K	
Radish	0.15	0.2	2222222	Vegetative stage- Oct	50	40	50	65	77	74	200	
				Rooting stage - Nov	50	80	60					
				Harvesting - Dec - Jan	50	60	60					
Carrot	0.15	0.2	2222222	Vegetative stage- Oct	50	40	50	65	77	74	250	
				Rooting stage- Nov	50	80	60					
				Harvesting - Dec - Jan	50	60	60					
Beet root	0.15	0.2	2222222	Vegetative stage- Oct	50	40	50	65	77	74	300	
				Rooting stage- Nov	50	80	60					
				Harvesting - Dec - Jan	50	60	60					
Cucumber	0.3	1.2	27778	Vegetative stage- Nov	50	30	60	139	84	151	100	
				Flowering stage- Dec	75	45	80					
				Harvesting - Jan - March	75	45	80					
Muskmelon	0.5	1.2	16667	Vegetative stage- Feb	25	15	30	91	54	131	200	
				Flowering stage- March	50	30	60					
				Harvesting - April - May	25	15	40					
Watermelon	0.9	1.2	9259	Vegetative stage- Feb	25	15	30	91	54	131	250	
				Flowering stage- March	50	30	60					
				Harvesting - April - May	25	15	40					
Bottle gourd	0.9	1.2	9259	Vegetative stage- Feb	25	15	40	87	52	139	300	
				Flowering stage- March	50	30	80					
				Harvesting - April - May	25	15	40					
Bitter gourd	0.5	1.2	16667	Vegetative stage- Feb	25	15	40	87	52	139	150	
				Flowering stage- March	50	30	80					
				Harvesting - April - May	25	15	40					
Ash gourd	0.9	1.2	9259	Vegetative stage- Feb	25	15	40	87	52	139	300	
				Flowering stage- March	50	30	80					
				Harvesting - April - May	25	15	40					

## जैविक पथ अग्रणी

### सर अल्बर्ट हॉवर्ड को एक श्रद्धांजलि

यह एक असाधारण व्यक्ति ही कर सकता है - एक वैश्विक ख्याति के वैज्ञानिक होने के बावजूद - अपने अपार ज्ञान का त्याग कर विनम्र भारतीय किसानों का छात्र बनकर विशिष्ट स्थिति में स्वस्थ फसल को उगाने की तकनीक सीखना।

सर अल्बर्ट हॉवर्ड (8 दिसंबर 1873 - 20 अक्टूबर 1947) एक माईकोलॉजिस्ट थे जिनके पास असाधारण ज्ञान शिक्षा तथा विनम्रता थी जिसके कारण वह प्रयोगशाला साधु के मानक को त्याग पाए - जोकि उनकी उम्र के वैज्ञानिकों तथा कई आज के वैज्ञानिक पुरुषों की पहचान होती है - और उन्होंने एक भारतीय किसान जिसे वह बुद्धिमान समझते थे तथा जिसे प्रकृति की अच्छी समझ थी का भेष धारण कर लिया।

सर अल्बर्ट 1905 में इंपीरियल आर्थिक वनस्पति वैज्ञानी के रूप में भारत आए थे तथा सन् 1924 तक उन्होंने कार्य किया इस अवधि में उन्होंने अपार ज्ञान अर्जित किया। 'समझ की कीमत पर हर जगह ज्ञान बढ़ता है। उपाय करने के लिए पूरे एक संबंधित विषय के रूप में फसल उत्पादन पशुपालन खाद्य पोषण और स्वास्थ्य को देखो तथा फिर महान सिद्धांत का एहसास करो कि हर फसल हर जानवर और इंसान का जन्मसिद्ध अधिकार स्वास्थ्य है' उन्होंने कहा।

'एक कृषि करार' 1940 में उनके द्वारा लिखी पहली पुस्तक थी जिसमें जैविक खेती पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए थे तथा इसी पुस्तक ने उन्हें 'जैविक खेती के पिता' का उपनाम दिलवाया लेकिन अपने 1931 में लिखी किताब 'कृषि के अपशिष्ट उत्पाद' में उन्होंने भारत में अर्जित किए अपने 26 सालों के ज्ञान को दर्शाया और बताया कैसे इस देश में छोटी जोतों में परिष्कृत उत्पादन प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

भारत में ही उन्होंने प्रसिद्ध 'इंदौर खाद की प्रक्रिया' पर अपने अधिकार की मोहर लगाई। सर अल्बर्ट ने संक्षेप में भारत में प्राचीन भारतीय खाद बनाने की विधि का वैज्ञानिक भाषा में अनुवाद करके पेश किया।

साधारण और शानदार

उनके विचार साधारण व्यक्ति और वैज्ञानिक दोनों को अर्पित करते हैं उनके तर्क सरल तथा शानदार थे। 'विकास की प्रक्रिया और क्षय की प्रक्रिया के बीच सही संबंध खेती का पहला सिद्धांत है। कृषि को हमेशा संतुलित किया जाना चाहिए।

अगर हम विकास की गति में तेजी लाना चाहते हैं तो हमें क्षय में तेजी लानी होगी। अगर दूसरी ओर हम मिट्टी भंडार गंवा रहे हैं तो यह फसल उत्पादन के लिए अच्छा नहीं होता यह बहुत कुछ अलग हो जाता है। किसान एक डाकू के रूप में तबदील हो जाता है।

जब नील विल्ड की चौंकाने वाली समस्या हॉवर्डस को सौंपी गई थी (वह अपनी पत्नी गैबरीयल लुईस कैरोलीन मैथाई 1876 - 1930 जो कि एक बहुत निपुण वनस्पतिशास्त्री थी के साथ मिलकर काम करते थे) - जिसका उपाय चार या पांच अन्य विभागों के प्रयास से भी नहीं हो पाया था - इसका सिर्फ एक ही चारा था कि इस पौधे के जमीन के उपर तथा नीचे के पूरे इतिहास को खंगालना। एक बार जब यह कदम उठाया गया तो भविष्य में सभी तरह की जांचों के लिए इसको चिह्नित कर दिया गया। लुईस ई हॉवर्ड कहते हैं 'भारत में सर अल्बर्ट हॉवर्ड' में।

### इंदौर खाद

सर अल्बर्ट हॉवर्ड ने भारत की हरी खाद प्रथाओं का अध्ययन किया तथा वैज्ञानिक स्तर पर उनका अनुभव करना चाहते थे। सर अल्बर्ट ने भारत इंदौर खाद का इजात कर अपने लिए नए आयाम स्थापित किए।

### किसान प्रध्यापक

भारत के किसानों (जिन्हें वह अपने उत्कर्ष ग्राहकों के रूप में मानते थे) को अपनी भूमि के ज्ञान के लिए महत्वपूर्ण मानते थे। वह उन्हें कृषि के प्रोफेसर भी कहते थे।

वह कीटों को मिट्टी की उर्वरता स्तर के संसर्ग के रूप में देखा करते थे जिनसे अनुपयुक्त परिस्थितियों में अनुपयुक्त फसलों को उगाया जा सकता है। उनका लक्ष्य हमेशा से मिट्टी पौधों पशुओं तथा आदमी के स्वास्थ्य की सारी समस्याओं को एक विषय के रूप में देखना था।

अद्वित सीख वह है जिसमें अनुपयुक्त परिस्थितियों को सही किया जाता है।

0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0

भारत कृषक समाज के अधिक से अधिक सदस्य बनकर संगठन को मजबूत बनाने में अपना सहयोग दें।